समाज विकासमाला

गिरिधर की कुण्डलियां

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

Girdhar ki kundaliya

Gen-Book **समाज-विकास-माला : २३**

Yeshpal jain

गिरिधर
की
कुण्डलियां

संग्राहिका
आदर्शकुमारी

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५८
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

तीसरी बार : १९५८
मूल्य
३७ नये पैसे

मुद्रक
सुरेंद्र प्रिंटर्स प्राईवेट लि०
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वह काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जब से ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों। यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है, इन सबकी भाषा बड़ी आसान रक्खी गई है और जहां तक हो सका है, मिले-जुले कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं होने दिया है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया है। विषय ऐसे लिए गये हैं, जिनमें पाठकों की खास रुचि हो। छपाई-सफाई के बारे में विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

हम चाहते हैं कि इन किताबों को पढ़कर इनके बारे में पाठक हमें अपनी राय लिखें। यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम होती हो तो उसकी भी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें। हम उन पर विचार करेंगे और उन सुझावों की बुनियाद पर किताबों को और ज्यादा अच्छी और उपयोगी बनाने का प्रयत्न करेंगे।

तीसरा-संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का तीसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही है, इससे हमें बड़ा आनंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायेंगे।

—मंत्री

पाठकों से

इस पुस्तक में हिन्दी के महान कवि गिरिधर की कुण्डलियां दी गई हैं। आपने इनमें से कुछ कुण्डलियां शायद पहले सुनी या पढ़ी भी होंगी। बहुत-सी कुण्डलियां आपको एक जगह मिल जायं, इसलिए उन्हें इकट्ठा करके यहाँ दिया गया है।

इन कुण्डलियों में नीति की बहुत अच्छी-अच्छी बातें बताई गई हैं। इनकी विशेषता यह है कि बड़ी-से-बड़ी बात भी बड़े सरल ढंग से इनमें कह दी गई है। इन कुण्डलियों का पूरा आनन्द और लाभ आपको मिल सके, इसलिए उनका अर्थ भी दे दिया गया है।

आप इन कुण्डलियों को पढ़िये और जो बहुत अच्छी लगें उन्हें याद कर लीजिये।

—संपादक

गिरिधर की कुण्डलियां

: १ :

गिरिधर कविराय कौन थे ?

गिरिधर कविराय आज से कोई ढाई सौ साल पहले हुए हैं। उनका जन्म संवत् १७१७ में हुआ था। वह कहां पैदा हुए, उनके माता-पिता कौन थे, वह क्या करते थे, कितने साल जीवित रहे, इसका ठीक-ठीक पता नहीं चलता। इतना मालूम होता है कि जिस जगह उनका जन्म हुआ, वह जगह उन्हें आगे जाकर छोड़ देनी पड़ी। कहते हैं कि उनके पड़ोस में एक बढ़ई आकर बस गया था। वह बड़ा होशियार था। कमाल की चीजें बनाता था, लेकिन दैवयोग से गिरिधर कविराय के साथ उसकी खटक गई। उस बढ़ई ने एक बार एक ऐसा पलंग बनाया जिसके चारों पायों पर चार पंखे लगे थे और जब कोई उस पलंग पर लेटता था तो वे पंखे अपने-आप चलने लगते थे। इस नई और अनोखी चीज को बढ़ई ने राजा को भेंट कर दिया। राजा बहुत खुश हुआ। उसने बढ़ई से कहा कि ऐसे

और पलंग बनाओ। गिरिधर कविराय के आँगन में बेर का एक बहुत अच्छा पेड़ था। बढ़ई ने उन्हें सताने का मौका देखकर राजा से कहा कि मैं पलंग तो बना दूंगा, लेकिन उसके लिए मुझे गिरिधर कविराय के आँगन के बेर की लकड़ी चाहिए। राजा को उन दोनों की लड़ाई का कोई पता न था। उसने बेर के पेड़ को काटने के लिए अपने आदमी भेज दिये। गिरिधर ने उन आदमियों को बहुत समझाया, वे न माने तो जाकर राजा से प्रार्थना की, लेकिन उनकी एक न चली। इससे दुखी होकर गिरिधर कवि ने वह राज्य छोड़ दिया और जगह-जगह घूमने लगे। इसी घूमने में उन्होंने बहुत-सी कुण्डलियां लिखीं।

कहते हैं कि कुछ कुण्डलियां उनकी स्त्री की भी लिखी हुई हैं, लेकिन सबमें 'कह गिरिधर कविराय' आता है, इसलिए यह कहना बड़ा कठिन है कि कौन-सी गिरिधर कविराय की है और कौन-सी उनकी स्त्री की। सबकी भाषा और कहने का ढंग भी एक-सा है। इसलिए उनमें फर्क करना और भी मुश्किल है।

गिरिधर कविराय की कुण्डलियों का आज भी हमारे शहरों और गांवों में प्रचार है। ये कुण्डलियां इतनी सरल हैं कि बिना पढ़ा-लिखा या कम पढ़ा-लिखा आदमी

भी उन्हें आसानी से समझ सकता है। हर दिन के काम और आपसी बातों के व्यवहार को लेकर उन्होंने कुण्डलियां लिखी हैं। उनमें अलंकारों की छटा नहीं है, न सन्त-कवियों की-सी गहराई ही है, लेकिन उनमें सबकी भलाई की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। ऐसा जान पड़ता है कि गिरिधर कविराय लोक-कवि थे। वह आत्मा, परमात्मा या उनसे सम्बन्ध रखने वाले दूसरे गूढ़ विषयों के वर्णन में नहीं पड़े, बल्कि उन्होंने आदमी के सुख-दुख, आपसी भाईचारे, सचाई-सफाई के व्यवहार, दूसरों की भलाई, घर-आए का मान-सम्मान, भले-बुरे का भेद आदि-आदि हर दिन के काम में आनेवाली बातों को अपनी रचना का विषय बनाया। कहीं-कहीं अपनी बात को अधिक जोरदार बनाने के लिए उन्होंने पुरानी धर्म-कथाओं का भी सहारा लिया है, जैसे बुरे दिनों के दुखों को दिखाने के लिए राजा हरिश्चन्द्र और अर्जुन का नाम लिया है :

साईं अवसर के पड़े को न सहै दुख द्वन्द।
जाय बिकाने डोम घर वे राजा हरिचन्द ।।
वे राजा हरिचन्द करैं मरघट रखवारी।
धरे तपस्वी वेष फिरे अर्जुन बलधारी ।।

लड़ाई के बुरे नतीजे को दिखाने के लिए हिरण्य-

कश्यप और कंस का :

साईं बेटा बाप के बिगरे भयो अकाज ।
हरनाकस्यप कंस को गयउ दुहन को राज ।।

भाषा की तरह उपमाएं भी उनकी बड़ी सरल हैं। धन-दौलत की तुलना उन्होंने चंचल जल से की है :

दौलत पाय न कीजिए सपने मैं अभिमान ।
चंचल जल दिन चार को ठाँउ न रहत निदान ।।

बुरे-भले का भेद करने के लिए कौवा और कोयल का उदाहरण दिया है :

गुन के गाहक सहस नर बिनु गुन लहै न कोय ।
जैसे कागा कोकिला शब्द सुनै सब कोय ।।
शब्द सुनै सब कोय कोकिला सबै सुहावन ।
दोऊ को एक रंग काग सब भये अपावन ।।

जहाँ तक उनसे बन पड़ा है, उन्होंने अपनी बात को बहुत ही सरल और सुन्दर ढंग से समझाने की कोशिश की है। इसमें शक नहीं कि उस समय के जितने कवि हुए है, उनमें गिरिधर कविराय का अपना स्थान है।

कुण्डलियाँ छः-छः लाइनों की होती हैं। गिरिधर कविराय की हर कुण्डली में भी उतनी ही पंक्तियां हैं। इन कुण्डलियों की दो बड़ी विशेषताएं हैं। पहली तो यह कि कुण्डली के शुरू में जो शब्द आता है, अधिकतर

कुण्डलियों के अखीर में भी वही शब्द मिलता है। दूसरी यह कि अपनी बात को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए उन्होंने दूसरी पंक्ति का आखिरी पद तीसरी पंक्ति के शुरू में दुहराया है।

इनके अलावा बहुत-सी कुण्डलियों में 'साईं' शब्द आता है। कुछ लोगों का कहना कि ये कुण्डलियां गिरिधर कविराय की स्त्री की लिखी हुई हैं, लेकिन इसका कोई पक्का सबूत नहीं मिलता।

नीति की अच्छी-अच्छी बातों से भरी हुई होने के कारण गिरिधर कविराय की कुण्डलियां हमेशा लोगों को लाभ पहुंचाती रहेंगी।

अब आगे कुछ कुण्डलियां पढ़िये।

गिरिधर की कुण्डलियां

१

बिना बिचारे जो करै सो पाछै पछिताय।
काम बिगारै आपनो जग में होत हँसाय॥
जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावै।
खान पान सन्मान राग रंग मनहिं न भावै॥
कह गिरिधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माँहि कियो जो बिना बिचारे॥

२

दौलत पाय न कीजिये सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को ठाँउ न रहत निदान॥
ठाँउ न रहत निदान जियत जग में यश लीजै।
मीठे वचन सुनाय बिनय सबही की कीजै॥
कह गिरिधर कविराय अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निशदिन चारि रहत सबही के दौलत॥

३

बीती ताहि बिसारिदे आगे की सुध लेइ।
जो बनि आवै सहज में ताही में चित देइ॥
ताही में चित देइ बात जोई बनि आवै।
दुर्जन हँसै न कोय चित्त में खता न पावै॥
कह गिरिधर कविराय यहै करु मन परतीती।
आगे को सुख समुझि होइ बीती सो बीती॥

१

जो बिना विचारे काम करता है, वह पीछे पछताता है। वह अपना काम बिगाड़ता है और दुनिया में उसकी हँसी होती है। उसके जी को चैन नहीं मिलता। खाना-पीना, मान, राग-रंग, उसके मन को कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि दुःख टालने से भी नहीं टलता और बिना विचारे जो काम किया जाता है वह दिल में खटकता रहता है।

२

दौलत पाकर सपने में भी घमंड न करो। यह चार दिन का चंचल जल है, कहीं भी टिक कर नहीं रहता। इसलिए जीतेजी दुनिया में यश कमालो। मीठे वचन बोलो और सबके आगे झुककर चलो।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि दौलत सबको परखती है, सबके यहां चार दिन की मेहमान रहती है।

३

जो बीत चुका है, उसे भूल जाओ और आगे का ध्यान रक्खो। जो सहज में कर सकते हो उसी के करने में मन लगाओ। जो हो सकता हो, वही करो। ऐसा काम न करो, जिससे बुरे लोगों को हँसने का मौका मिले और अपने मन में बुरा लगे।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि मन में ऐसा ही विश्वास रक्खो और जो हो गया सो हो गया, यह मान कर आगे के सुख को समझो।

साईं अपने भ्रात को कबहुँ न दीजै त्रास।
पलक दूर नहिं कीजिये सदा राखिये पास।।
सदा राखिये पास त्रास कबहूँ नहिं दीजै।
त्रास दियो लंकेश ताहि की गति सुनि लीजै।।
कह गिरिधर कविराय रामसों मिलियो जाई।
पाय विभीषण राज लंकपति बाज्यो साईं।।

५

पानी बाढ़ो नाव में घर में बाढ़ो दाम।
दोनों हाथ उलीचिये यही सयानो काम।।
यही सयानो काम राम को सुमिरन कीजै।
परस्वारथ के काज शीश आगे धरि दीजै।।
कह गिरिधर कविराय बड़ेन की याही बानी।
चलिये चाल सुचाल राखिये अपनो पानी।।

६

साईं अवसर के पड़े को न सहै दुख द्वन्द।
जाय बिकाने डोम घर वै राजा हरिचन्द।।
वै राजा हरिचन्द करैं मरघट रखवारी।
धरे तपस्वी वेष फिरे अर्जुन बलधारी।।
कह गिरिधर कविराय तपै वह भीम रसोई।
को न करै घटि काम परे अवसर के साईं।।

४

अपने भाई को कभी दुःख मत दो। एक पल भी उसे दूर न करो, हमेशा अपने पास रखो। रावण ने अपने भाई को सताया, उसका जो हाल हुआ उसे सुन लो।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि विभीषण जाकर राम से मिल गया और लंका का राज पाकर वहां का राजा कहलाया।

५

नाव में पानी बढ़ जाय और घर में धन-दौलत अधिक हो जाय तो दोनों हाथों से उसे उलीच दो, बाहर निकाल दो। यही होशियारी का काम है। राम नाम का सुमिरन करो और दूसरे की भलाई के लिए अपना सिर भी आगे करना पड़े तो करदो।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि बड़ों का कहना है—अच्छी चाल चलो और अपना मान रक्खो।

६

बुरा समय आने पर कौन है जिसे मुसीबतें नहीं सहनी पड़तीं? राजा हरिश्चन्द्र को महतर के घर जाकर बिकना पड़ा था और मरघट की रखवाली करनी पड़ी थी। तपस्वी का भेस रखकर अर्जुन को भटकना पड़ा था।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि भीम को दूसरे के घर रसोई पकानी पड़ी थी। बुरा समय आने पर किसको छोटा काम नहीं करना पड़ता?

७

कृतघन कबहुं न मानहीं कोटि करै जो कोय ।
सर्बस आगे राखिये तऊ न अपनो होय ।।
तऊ न अपनो होय भले की भली न मानै ।
काम काढ़ि चुप रहै फेरि तेहि नहिं पहिचानै ।।
कह गिरिधर कविराय रहत नित ही निर्भय मन ।
मित्र शत्रु सब एक दाम के लालच कृतघन ।।

८

साईं सब संसार में मतलब का व्यवहार ।
जब लग पैसा गांठ में तब लग ताको यार ।।
तब लग ताको यार यार संग ही संग डोलै ।
पैसा रहा न पास यार मुख से नहीं बोलै ।।
कह गिरिधर कविराय जगत यहि लेखा भाई ।
करत बेगरजी प्रीति यार बिरला कोई साईं ।।

९

साईं अपने चित्त की भूलि न कहिये कोइ ।
तब लग मन में राखिये जब लग कारज होइ ।।
जब लग कारज होइ भूलि कबहूँ नहिं कहिये ।
दुरजन हँसे न कोय आप सियरे ह्वै रहिये ।।
कह गिरिधर कविराय बात चतुरन के ताईं ।
करतूती कहि देत आप कहिये नहिं साईं ।।

७

कृतघ्न आदमी के लिए कोई कितना भी करे वह गुन-अहसान नहीं मानता। उसके आगे चाहे अपना सबकुछ रख दो फिर भी वह अपना नहीं होता। भलाई करने वाले की भलाई को वह नहीं मानता। अपना काम निकाल कर चुप हो जाता है और फिर काम करनेवालों को पहचानता तक नहीं।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि ऐसे आदमी के मन में कभी डर नहीं आता। पैसे के ऐसे लालची कृतघ्न के लिए मित्र और शत्रु के बीच कोई भेद नहीं होता।

८

इस दुनिया में सब मतलब का व्यवहार है। जब तक अपनी गांठ में पैसा है तबतक आदमी मित्र रहता है, साथ लगा फिरता है। जब पैसा पास में नहीं रहता तो वह मुंह से भी नहीं बोलता।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि दुनिया की यही रीति है। बिना मतलब के प्रेंम करनेवाले बिरले ही होते हैं।

९

अपने मन की बात भूल कर भी किसी से मत कहो। जबतक काम न हो जाय उसे अपने मन में ही रक्खो। बुरे आदमियों को हँसने का मौका न मिले, इसलिए शांत ही रहो।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि यह बात चतुर आदमियों के लिए है। काम अपने आप सामने आ जाता है, आदमी को उसके कहने की जरूरत नहीं।

१०

गुन के गाहक सहस नर बिनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला शब्द सुनै सब कोय॥
शब्द सुनै सब कोय कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को एक रंग काग सब भये अपावन॥
कह गिरिधर कविराय सुनो हो ठाकुर मन के।
बिन गुन लहै न कोय सहस नर गाहक गुन के॥

११

साईं समय न चूकिये यथाशक्ति सन्मान।
को जाने को आइ है तेरी पौरि प्रमान॥
तेरी पौरि प्रमान समय असमय तकि आवै।
ताको तू मन खोलि अंक भरि हृदय लगावै॥
कह गिरिधर कविराय सबै यामे सधि आई।
शीतल जल-फल-फूल समय जनि चूको साईं॥

१२

साईं बेटा बाप के बिगरे भयो अकाज।
हरनाकस्यप कंस को गयउ दुहुन को राज॥
गयउ दुहुन को राज बाप बेटा में बिगरी।
दुसमन दावागीर हँसै महि मण्डल नगरी॥
कह गिरिधर कविराय युगन याही चलि आई।
पिता पुत्र के बैर नफा कहु कौने पाई॥

१०

गुण को लेने वाले तो हजारों लोग होते हैं। बिना गुण के लेनेवाला कोई भी नहीं होता। जैसे कौआ और कोयल की आवाज तो सब लोग सुनते हैं, लेकिन अच्छी सबको कोयल ही लगती है। दोनों का रंग एक होते हुए भी कौए सब अपवित्र होते हैं।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि ओ मन के ठाकुर, सुनो! बिना गुण के इस संसार में कोई भी नहीं लेता और गुण के लेनेवाले हजारों लोग होते हैं।

११

अपनी बिसात भर दूसरों की आव-भगत करने का अवसर मत चूको। कौन जानता है कि तुम्हारे द्वार पर कौन आता है। जो भी समय-असमय तुम्हारे दरवाजे पर आवे उसको तुम जी खोलकर और बाहें फैलाकर हृदय से लगाओ।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि इसी में सब सध जाता है। ठंडा पानी, फल-फूल जो भी कुछ तुम्हारे पास हो उसी से घर आए मेहमान की खातिर करो।

१२

बाप और बेटे में बिगड़ने से बुरा ही होता है। देखो आपस की लड़ाई से हिरण्यकश्यप और कंस, दोनों का राज चला गया। बाप-बेटे में बिगड़ जाने से दुश्मन और दुनिया भर के सब लोग हँसते हैं।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि युगों से यही बात चली आ रही है। बाप-बेटे के वैर में किसे कब लाभ पहुंचा है?

१३

साईं बैर न कीजिये गुरु पंडित कवि यार।
बेटा बनिता पंवरिया यज्ञ करावनहार।।
यज्ञ करावनहार राज-मन्त्री जो होई।
विप्र पड़ोसी वैद्य आपको तपै रसोई।।
कह गिरिधर कविराय युगन ते यहि चलि आई।
इन तेरहसों तरह दिये बनि आवै साईं।।

१४

साईं ये न विरोधिये छोट बड़े सब भाय।
ऐसे भारी वृक्ष को कुल्हरी देत गिराय।।
कुल्हरी देत गिराय मारके जमीं गिराई।
टूक टूक कै काटि समुद में देत बहाई।।
कह गिरिधर कविराय फूट जेहि के घर आई।
हिरनाकस्यप कंस गये बलि रावण भाई।।

१५

लाठी में गुण बहुत हैं सदा राखिये संग।
गहिर नदी नारा जहाँ तहाँ बचावै अंग।।
तहाँ बचावै अंग झपटि कुत्ता कहं मारै।
दुश्मन दावागीर होयँ तिनहूँ को झारै।।
कह गिरिधर कविराय सुनो हो धूर के बाठी।
सब हथियारन छाँड़ि हाथ महं लीजै लाठी।।

१३

गुरु, पंडित, कवि, मित्र, बेटा, स्त्री, द्वारपाल, यज्ञ करानेवाला, राज-मंत्री, ब्राह्मण, पड़ौसी, वैद्य और तुम्हारा खाना बनानेवाला रसोइया, इनसे बैर न करो।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि युगों से यही बात चली आई है। इन तेरह से बिगाड़ करना मुसीबत मोल लेना है।

१४

छोटे बड़े सब भाई-भाई हैं। उनका विरोध न करो। छोटी-सी कुल्हाड़ी बड़े-से-बड़े पेड़ को काट कर धरती पर गिरा देती है। पेड़ के टुकड़े-टुकड़े करके समुद्र में बहा देती है।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि फूट जिसके घर पड़ जाती है, उसका नाश कर देती है। फूट के कारण ही हिरण्यकश्यप, कंस और बली रावण का नाश हुआ।

१५

लाठी में बहुत से गुण हैं। उसे हमेशा अपने पास रक्खो। जहां गहरी नदी या नाला आता है, वह वहां रक्षा करती है। झपट कर कुत्ते को मार भगाती है। दुश्मन आगे बढ़ कर आता है तो उसकी भी खबर लेती है।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि ओ राहगीरो, सुनो, सब हथियारों को छोड़कर लाठी को हाथ में ले लो।

१६

राजा के दरबार में जैयें समया पाय।
साइँ तहां न बैठिये जहँ कोउ देय उठाय॥
जहँ कोउ देय उठाय बोल अनबोले रहिये।
हँसिये नहीं हहाय बात पूछे ते कहिये॥
कह गिरिधर कविराय समय सों कीजै काजा।
अति आतुर नहिं होय बहुरि अनखैहैं राजा॥

१७

जाकी धन धरती हरी ताहि न लीजै संग।
जो चाहै लेतो बनौ तो करि डारु निपंग॥
तो करि डारु निपंग भूलि परतीत न कीजै।
सौ सौगन्दैं खाय चित्त में एक न दीजै॥
कह गिरिधर कविराय खटक जैहै नहिं ताकी।
अरि समान परिहरिय हरी धन धरती जाकी॥

१८

साईं ऐसे पुत्र से बांझ रहे बरु नारि।
बिगरी बेटे बाप से जाय रहै ससुरारि॥
जाय रहै ससुरारि नारि के नाम बिकाने।
कुल के धर्म नसाय और परिवार नसाने॥
कह गिरिधर कविराय मातु झंखै वहि ठाईं।
असि पुत्रनि नहिं होय बांझ रहतिउँ बरु साईं॥

१६

राजा के दरबार में समय देखकर जाओ। जहां से कोई उठा दे वहाँ न बैठो। चुप रहो। ठहाका मार कर न हँसो और पूछने पर अपनी बात बताओ।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि समय देखकर काम करो। राजा के सामने अधिक उतावलापन न दिखाओ, नहीं तो राजा को झुंझलाहट होगी।

१७

जिसका धन और धरती छीन ली गई है, उसको अपने साथ न रक्खो। अगर उसे साथ लेना ही हो तो अपंग बना दो। उसपर भूल कर भी विश्वास न करो। सौ बार भी वह कसम खावे, पर एक बार भी उसपर भरोसा न करो।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि उसके मन की खटक कभी दूर नहीं होती। जिसका धन और धरती हर ली गई है, उसे दुश्मन की तरह अलग ही रखना चाहिए।

१८

ऐसे पुत्र से तो स्त्री का बांझ रहना ही अच्छा है, जो बाप से बिगाड़ कर ससुराल जाकर रहे। स्त्री के नाम पर बिक जाय। कुल के धर्म और परिवार को बट्टा लगावे।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि मां घर में झींकती है। ऐसे बेटे के होने से तो उसका बांझ होना अच्छा है।

१९

रहिये लटपट काटि दिन बरु घामें मां सोय।
छाँह न बाकी बैठिये जो तरु पतरो होय॥
जो तरु पतरो होय एक दिन धोखा दैहै।
जा दिन बहै बयारि टूटि तब जरसे जैहै॥
कह गिरिधर कविराय छाँह मोटे की गहिये।
पाता सब झरि जाय तऊ छाया में रहिये॥

२०

सोना लादन पिय गये सूना कर गये देश।
सोना मिला न पिय मिले रूपा ह्वै गये केश॥
रूपा ह्वै गये केश रोय रंग रूप गंवावा।
सेजन को बिसराम पिया बिन कबहुं न पावा॥
कह गिरिधर कविराय लोन बिन सबै अलोना।
बहुरि पिया घर आव कहा करिहौं लै सोना॥

२१

साईं घोड़े आछतहि गदहन पायो राज।
कौआ लीजै हाथ में दूरि कीजिये बाज॥
दूरि कीजिये बाज राज पुनि ऐसो आयो।
सिंह कीजिये कैद स्यार गजराज चढ़ायो॥
कह गिरिधर कविराय जहां यह बूझि बधाई।
तहाँ न कीजै भोर साँझ उठि चलिये साईं॥

१९

दुख-सुख से जैसे भी दिन काट सको काट लो, धूप में रहना पड़े तो रह लो, लेकिन कमजोर पतले पेड़ के नीचे मत बैठो। ऐसा पेड़ किसी भी दिन धोखा दे जायगा। जिस दिन हवा चलेगी, वह जड़ से टूट जायगा।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि बड़े मोटे पेड़ की छाँह में बैठो। उसके तमाम पत्ते झड़ जायंगे, तब भी उसकी छाया मिलेगी।

२०

पिया सोना लेने परदेस गये और देश सूना कर गये। न तो सोना मिला, न पिया ही यहाँ रहे। बाल पककर सफेद हो गए। रो-रो कर रूप-रंग भी गँवा दिया। बिना पिया के कभी आराम अच्छा नहीं लगा।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि बिना नमक के सब अलौना (बेस्वाद) लगता है। पिया फिर घर आ जायं। सोना लेकर क्या करना है?

२१

यदि रास्ता चलते-चलते एेसे किसी राज्य में पहुँच जाओ जहाँ घोड़ों के रहते हुए गदहों का बोल-बाला हो, जहाँ बाज को छोड़कर कौए को हाथ में लिया जाता हो और जहाँ शेर को कैद में डालकर गीदड़ को हाथी पर बिठाया जाता हो, जहाँ ऐसी (उल्टी) समझ हो वहाँ, गिरिधर कविराय कहते हैं, रात भर के लिए भी न ठहरो। वहाँ से शाम को ही चल दो।

२२

कमरी थोरे दाम की आवै बहुतै काम।
खासा मलमल बाफता उनकर राखै मान ।।
उनकर राखै मान बुन्द जहँ आड़े आवै।
बकुचा बाँधे मोट रात को झारि बिछावै ।।
कह गिरिधर कविराय मिलत है थोरे दमरी।
सब दिन राखै साथ बड़ी मर्यादा कमरी ।।

२३

बेटा बिगरे बाप सों करि तिरियन को नेहु।
लटापटी होने लगी मोंहि जुदा करि देहु ।।
मोंहि जुदा करि देहु घरीमा माया मेरी।
लेहौं घर अरु द्वार करौं मैं फजिहत तेरी ।।
कह गिरिधर कविराय सुनों गदहा के लेटा।
समय परयो ह्वै आय बाप से झगरत बेटा ।।

२४

दाड़िम के धोखे गयो सुवा नारियल खान।
खान न पायो नेक कछु फिर लागो पछितान ।।
फिर लागो पछितान बुद्धि अपनी को रोया।
निर्गुणियन के साथ बैठि अपनो गुण खोया ।।
कह गिरिधर कविराय सुनो हो मोरे नोखे।
गयो झटाका टूटि चोंच दाड़िम के धोखे ।।

२२

थोड़े दाम का होने पर भी कम्बल बहुत काम आता है। खासा, मलमल और बाफ्ता इनका मान रखता है। अचानक मेंह में फँस जाने पर उन्हें बचाता है। उसमें सामान रखकर बड़ी पोटली बांधी जा सकती है और रात को झाड़कर उससे बिछावन का काम लिया जा सकता है।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि कम्बल थोड़े दाम में मिल जाता है। उसे हमेशा अपने साथ रखो, वह बहुत मर्यादा रखनेवाला है, काम का है।

२३

अपनी स्त्री के प्रेम में बेटा बाप से बिगाड़ता है। झगड़ा करता है और कहता है कि मुझे अलग करदो। मेरा हिस्सा फौरन मुझे दे दो। मैं घर-बार सब ले लूंगा और तुम्हारी फजीहत करूंगा।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि ओ भोले लोगो, समय ऐसा आ गया है कि बेटा बाप से झगड़ता है।

२४

तोता अनार के धोखे में नारियल खाने पहुँच गया। उसे तनिक भी नहीं खा पाया और फिर पछताने लगा। अपनी बुद्धि पर रोने लगा। बिना गुणवालों के साथ अपना गुण भी खो बैठा।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि मेरे मित्रो, सुनो, अनार के धोखे में तोते ने चोंच को चोट और पहुंचा ली।

२५

झूठा मीठे बचन कहि ऋण उधार ले जाय।
लेत परम सुख ऊपजै लैके दियो न जाय॥
लै के दियो न जाय ऊँच अरु नीच बतावै।
ऋण उधार की रीति माँगते मारन धावै॥
कह गिरिधर कविराय जानि रहै मन में रूठा।
बहुत दिना ह्वै जाय कहै तेरौ कागज झूठा॥

२६

हाइ हाइ तबलग रहै जबलग बाह्यहु दृष्टि।
अन्तर्मुख जब धी भई सब मिट जायं अनिष्ट॥
सब मिट जायं अनिष्ट रहो उत्तर वा बाँगर।
जहाँ जाय तहँ अनँद जबै मन भयो इकागर॥
कह गिरिधर कवि धाम चारि फिर आवै धाई।
जीव ब्रह्म इक ज्ञान बिना ना मिटिहै हाई।

२७

हुक्का से हुरमत गई नियम धर्म गयो छूट।
दाम खर्च लियो तमाकू गई हिए की फूट॥
गई हिए की फूट आग को घर घर डोलै।
जिस घर आग को जाय सोई कुर्राती बोलै॥
कह गिरिधर कविराय लगै जब यम कौ रुक्का।
प्राण जायंगे छूट सहाय होवे नहिं हुक्का॥

२५

झूठा आदमी मीठी-मीठी बातें बनाकर रुपया उधार ले जाता है। लेते समय तो उसे अच्छा लगता है, लेकिन उससे दिया नहीं जाता। अपनी लाचारी दिखाता है और रुपया वापस मांगने पर मारने दौड़ता है।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि कुछ दिन तो वह रूठा रहता हैं और बहुत दिन हो जाने पर कागज को ही झूठा कहता है।

२६

जबतक आदमी की निगाह बाहर रहती है तबतक उसकी जान के साथ 'हाय-हाय' लगी रहती है। जब वह अन्दर झांकता है तो उसकी सारी बुराइयां दूर हो जाती हैं। जब आदमी का मन भगवान में रम जाता है तो वह उत्तर में रहे या दक्षिण में, उसे सभी जगह आनन्द मिलता है। गिरिधर कविराय कहते हैं कि चाहे वह चारों धाम की यात्रा कर आवे, उसकी 'हाय' तबतक नहीं मिटेगी जबतक वह यह नहीं जान लेता कि जीव और ब्रह्म एक हैं।

२७

हुक्का से अकल बिगड़ गई और नियम-धर्म सब छूट गया। अपनी गांठ से पैसा खर्च करके तम्बाकू लिया और आग के लिए घर-घर घूमता है। जिस घर में आग के लिए जाता है, वहीं से फटकार मिलती है।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि जब यमदूत का परवाना आवेगा प्राण छूट जायंगे, हुक्का तनिक भी काम नहीं आवेगा।

२८

पुत्र प्राण ते अधिक है चारिउ जुग परिमान ।
सो दसरथ नृप परिहरेउ वचन न दीन्हो जान ।।
वचन न दीन्हो जान बड़ेन की बुझि बड़ाई ।
बात रहै सो काज और बरु सरबस जाई ।।
कह गिरिधर कविराय भए नृप दसरथ ऐसे ।
पुत्र-प्राण परिहरे वचन परिहरे न ऐसे ।।

२९

हीरा अपनी खानि को बार बार पछिताय ।
गुण कीमत जाने नहीं तहाँ बिकानो आय ।।
तहाँ बिकानो आय छेद करि कटि में बांध्यो ।
बिन हरदी बिन लौन माँस ज्यों फूहर रांध्यो ।।
कह गिरिधर कविराय कहाँ लगि धरिये धीरा ।
गुण कीमत घटि गई यहै कहि रोयो हीरा ।।

३०

रानी रही न कैकेयी अमर भई यह बात ।
कौन पुरबले पाप ते वन पठयो जग तात ।।
वन पठयो जग तात कन्त सुरलोक सिधारेउ ।
जेहि सुत कारज मरेउ राउ नहिं वदन निहारेउ ।।
कह गिरिधर कविराय भई वह अकथ कहानी ।
यश अपयश रह गयेउ रही नहिं कैकेयी रानी ।।

२८

चारों युग से यह बात मानी जाती रही है कि बेटा प्राणों से भी अधिक है। लेकिन राजा दशरथ ने बचन को नहीं छोड़ा, बेटे का त्याग कर दिया। ऐसा करके उन्होंने बड़प्पन की रक्षा की। बात रहे, भले ही सब-कुछ चला जाय।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि ऐसे राजा दशरथ हुए हैं। बेटे का त्याग कर दिया, लेकिन बचन नहीं छोड़ा।

२९

हीरा ऐसी जगह बिक गया है, जहां कोई भी उसके गुण और मूल्य को नहीं जानता। वह बार-बार पछताता है। लेनेवाले ने उसमें छेद करके अपनी कमर में बांध लिया। यह ऐसे ही हुआ जैसे फूहड़ स्त्री बिना हलदी और नमक के मांस पकावे।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि धीरज कहाँ तक रक्खा जाय। हीरा यह कहकर रोने लगा कि अब तो गुण और कीमत घट गई है।

३०

रानी कैकेयी नहीं रहीं, लेकिन उनकी बात अमर हो गई। जाने किस पूर्वजन्म के पाप से उन्होंने राम को वन भेजा। पति सुरलोक चले गये। जिस बेटे के लिए राजा मरे, उनको देख भी नहीं पाये।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि यह एक ऐसी कहानी बन गई है, जो कही भी नहीं जाती। यश और अपयश रह गया, पर रानी कैकेयी नहीं रही।

३१

साईं पुर ज्वाला उठी आसमान को धाय ।
अन्धहि पंगुहि छोड़िकै पुरजन चले पराय ।।
पुरजन चले पराय अन्ध एक मती विचारो ।
पंगुहि लीन्हे कन्ध पीठ वाके पगु धारो ।।
कह गिरिधर कविराय सुमति ऐसी चलि आई ।
बिना सुमति को राज गयो रावण को साईं ।।

३२

चिन्ता ज्वाल शरीर की दाह लगै न बुझाय ।
प्रगट धुंआ नहीं देखिए उर अन्तर धुंधवाय ।
उर अन्तर धुंधवाय जरै जस कांच की भट्टी ।
रक्त मांस जरिजाय रहै पांजरि की ठट्टी ।।
कह गिरिधर कविराय सुनो रे मेरे मिन्ता ।
वे नर कैसे जियैं जिन्हें घर व्यापी चिन्ता ।।

३३

तन दुरुस्त से होत हैं विषय जन्म सुख भोग ।
धन दुरुस्त से फिरत हैं आगे पीछे लोग ।।
आगे पीछे लोग जो मन की होय दुरुस्ती ।
भोगैं ब्रह्मानन्द अविद्या करै न सुस्ती ।
कह गिरिधर कविराय विवेकी जो हैं हरिजन ।।
मन को करै दुरुस्त दुरुस्त न चाहैं धन तन ।।

३१

नगर में आग लग गई और उसकी ज्वाला आसमान तक उठने लगी। एक अंधे और लूले को छोड़कर नगर के सब लोग दूसरी जगह चले गये। अंधे को एक उपाय सूझा। उसने लूले को कंधे पर बिठा लिया और इस तरह दोनों बाहर निकल गये।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि ऐसी सुमति से काम होता है। बिना सुमति के रावण का राज चला गया।

३२

शरीर में चिता की ज्वाला धधकने लगती है तो बुझाने से भी नहीं बुझती। उसका धुंवा बाहर नहीं दीखता। हृदय के अन्दर ही भरा रहता है। कांच की भट्टी की तरह से भीतर आग जलती है। उसमें खून और मांस सब जल जाता है और शरीर हड्डियों का ढांचा रह जाता है।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि ओ मेरे मित्रो, सुनो, जिनके हृदय में चिन्ता व्यापी हुई है वे लोग जिन्दा कैसे रह सकते हैं?

३३

शरीर ठीक होता है तो उसके साथ सुख-भोग, जन्म चलते हैं। धन पास में होता है तो लोग आगे-पीछे लगे रहते हैं। मन की दुरुस्ती होती है तो उससे ब्रह्मानन्द मिलता है और अविद्या पास नहीं टिकती।

गिरिधर कविराय कहते हैं कि भगवान के जो ज्ञानवान लोग हैं, उनके पास धन हो या न हो, शरीर उनका चंगा हो या न हो, मन को ठीक रखते हैं।

●

'मंडल' की दूसरी लोकप्रिय पुस्तकमाला

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

संस्कृत के महान ग्रन्थों का सरल-सुबोध हिन्दी में कथासार।

१. कादम्बरी (बाणभट्ट)
२. उत्तररामचरित (भवभूति)
३. वेणीसंहार (भट्टनारायण)
४. शकुन्तला (कालिदास)
५. मृच्छकटिक (शूद्रक)
६. मुद्राराक्षस (विशाखदत्त)
७. नलोदय (कालिदास)
८. रघुवंश (कालिदास)
९. नागानन्द (हर्ष)
१०. स्वप्नवासवदत्ता (भास)
११. मालविकाग्निमित्र (कालिदास)
१२. हर्षचरित (बाणभट्ट)
१३. किरातार्जुनीय (भारवि)
१४. दशकुमार चरित-भाग १ (दंडी)
१५. दशकुमार चरित-भाग २ (दंडी)
१६. मेघदूत (कालिदास)
१७. विक्रमोर्वशी (कालिदास)
१८. मालती माधव (भवभूति)
१९. शिशुपाल-वध (माघ)
२०. बुद्ध-चरित (अश्वघोष)
२१. कुमारसम्भव (कालिदास)
२२. महावीर-चरित (भवभूति)
२३. रत्नावली (हर्ष)
२४. पंचरात्र (भास)

सरल भाषा, बढ़िया छपाई, आकर्षक कवर।

मूल्य प्रत्येक का ३७ नये पैसे

सस्ता साहित्य मण्डल

नई दिल्ली।

Name of the Borrower	Card No.	Due Date

समाज विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

२३

सस्ता साहित्य मण्डल

सैंतीस नये पैसे